बेहद का वैराग्य - 11

अव्यक्त बापदादा :- (02. 12. 1993)

➳ _ ➳ अपने को राजऋषि समझते हो? राज भी और ऋषि भी। **स्वराज्य मिला तो राजा भी हो और साथ-साथ पुरानी दुनिया का ज्ञान मिला तो पुरानी दुनिया से बेहद के वैरागी भी हो इसलिये ऋषि भी हो।** एक तरफ़ राज्य, दूसरे तरफ़ ऋषि अर्थात् बेहद के वैरागी। तो दोनों ही हो? बेहद का वैराग्य है या थोड़ा-थोड़ा लगाव है। अगर कहाँ भी, चाहे अपने में, चाहे व्यक्ति में, चाहे वस्तु में कहाँ भी लगाव है तो राजऋषि नहीं। न राजा है, न ऋषि है।

➳ _ ➳ **क्योंकि स्वराज्य है तो मन बुद्धि-संस्कार सब अपने वश में है।** लगाव हो नहीं सकता। अगर कहाँ भी संकल्प मात्र थोड़ा भी लगाव है, तो राजऋषि नहीं कहेंगे। अगर लगाव है तो दो नाव में पांव हुआ ना। थोड़ा पुरानी दुनिया में, थोड़ा नई दुनिया में। इसलिए **एक बाप, दूसरा न कोई**। क्योंकि दो नाव में पांव रखने वाले क्या होते हैं? न यहाँ के, न वहाँ के। इसलिये **राजऋषि राजा बनो और बेहद के वैरागी भी बनो।**

➢➢ स्वराज्य

➳ _ ➳ स्वराज्य मिला तो राजा भी हो और साथ-साथ पुरानी दुनिया का ज्ञान मिला तो पुरानी दुनिया से बेहद के वैरागी भी हो

→ तो सिर्फ इसलिए वैरागी नही है कि पुरानी दुनिया का ज्ञान मिला लेकिन इसलिए भी वैरागी कि नयी दुनिया का भी ज्ञान मिला

➳ _ ➳ **एक तरफ़ राज्य, दूसरे तरफ़ ऋषि अर्थात् बेहद के वैरागी**

→ हम सभी यानि सारा संसार एक ऐसे घोड़े पर सवार है और बहुत तेज वो घोडा दौड रहा है

→ **सामने पत्थर की दीवार है और हम बहुत तेज घोड़े को दौड़ाता जा रहे है लगाम को खींच नही रहे है।**

→ हमने ऐसी संसार की हालत कर दी है

- ज्ञान मिला है तो वैराग भी आता है

➳ _ ➳ क्योंकि स्वराज्य है तो मन बुद्धि-संस्कार सब अपने वश में है

→ अगर कहां भी थोडा लगाव है लगाव यानि अटैचमेट है तो बेहद के वैरागी नही हो सकते

→ जैसे आत्मा है यहां पर जहां जहां लगाव है वैभव है जो भी चीजो है

→ **तो उनकी तरफ लगाव होने से आत्मा की ऊर्जा बह रही है बैटरी डिस्चार्ज हो रही है**

- उनकी तरफ ऊर्जा वहां खींच रही है

➳ _ ➳ लगाव झुकाव है और अपने वश मे मन बुद्धि नही हुए

→ तो बेहद के वैरागी नही हुए

→ तो दो नावों मे पैर हुआ

→ न यहां के न वहां के रहेगे

➳ _ ➳ इसलिए राजऋषि राजा बनो

अव्यक्त बापदादा :- (05. 12. 1994)

➳ _ ➳ यथार्थ वैराग्य वृत्ति का सहज अर्थ है-चाहे आत्माओं के सम्पर्क में आयें, चाहे साधनों के सम्बन्ध में आयें, चाहे सेवा के चांस में चांसलर बनने का भाग्य मिले लेकिन **सर्व के सम्बन्ध-सम्पर्क में प्यारापन का अर्थ है निमित्त भाव, निर्मान भाव**। होता क्या है? कभी न्यारेपन की परसेन्टेज़ बढ़ जाती और कभी प्यारेपन की परसेन्टेज़ बढ़ जाती। प्यारापन का अर्थ है निमित्त भाव, निर्मान भाव। लेकिन इसके बदले मेरेपन का भान आ जाता। ये मेरा ही काम है, मेरा ही स्थान है, मुझे ही सर्व साधन भाग्य अनुसार मिले हुए हैं, इतनी मेहनत से मैंने ये साधन, स्थान वा सेवा वा सेवा साथी (स्टूडेन्ट्स भी साथी हैं) बनाये हैं। ये मेरा है, क्या मेरी मेहनत की कोई वैल्यू नहीं है?

➳ _ ➳ ये निमित्त भाव और मेरेपन के भाव में अन्तर है या एक ही है? ये मेरापन रॉयल रूप से बढ़ गया है। **ये मेरेपन की रॉयल भाषा, रॉयल संकल्प बाप से रुहरिहान में भी बापदादा बहुत सुनते हैं।** बहुत प्यार से बाप को या निमित्त आत्माओं को मनाने या मनवाने आते हैं - बाबा आप ही इसमें मेरे को मदद करना, आप क्या समझते हो कि ये मेरा काम नहीं है, मेरी ज़िम्मेदारी नहीं है, मेरा अधिकार मेरे को ही मिलना चाहिये। बाप को भी ज्ञान देने के लिये बहुत होशियारी करते हैं। बापदादा मुस्कराते रहते हैं। **निमित्त हैं, जो मिला, जैसे मिला, जहाँ बिठायेंगे, जो खिलायेंगे, जो करायेंगे वही करेंगे।**

➳ _ ➳ ये पहला-पहला सभी का वायदा है। वायदा है ना? ये वायदा है या सिर्फ खाने-पीने के लिये है? **मेरेपन के भाव का वैराग्य ही बेहद का वैराग्य है।** नये-नये प्रकार के मेरेपन और इमर्ज हो रहे हैं। माया वर्तमान समय नये-नये प्रकार के मेरेपन की छाया डाल रही है। इसलिये समय की समीपता प्रत्यक्ष रूप में नहीं आ रही है। ज्ञानी, चाहे अज्ञानी, दोनों जानते हैं और कहते भी हैं कि दुनिया की हालते बहुत खराब है, ये दुनिया कहाँ तक चलेगी, कैसे चलेगी? लेकिन फिर भी दुनिया चल रही है।

➳ _ ➳ **समय की समीपता का फाउण्डेशन है - बेहद की वैराग्य वृत्ति।** बापदादा ने चेक किया बेहद की वैराग्य वृत्ति के बजाय नये-नये प्रकार के छोटे-छोटे लगाव का विस्तार बहुत बड़ा है। इस विस्तार ने सार को छिपा लिया है। समझा? अब क्या करना है? बेहद की वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल बनाओ। जैसे सेवा का वायुमण्डल बनाते हो ना, प्रोग्राम बनाते हो। सिर्फ दिमाग तक ये वृत्ति नहीं, दिल तक पहुँचे। सबके दिमाग में तो है-होना चाहिये, करना चाहिये लेकिन दिल में ये लहर उत्पन्न हो जाये इसकी आवश्यकता है। समझा?

➢➢ न्यारा और प्यारा

➳ _ ➳ न्यारापन और न्यारापन का बैलेंस चाहिए

→ प्यारापन का अर्थ है निमित्त भाव, निर्मान भाव

→ न्यारापन नही रहता तो मेरापन आ जाता है

→ हर एक के लिए एक शब्द बहुत प्यारा है

- मैं मेरा और अपना नाम
- **मेरा मेरा से हर पल बस बाबा बाबा**
- **जो भी है बाबा का है**

→ **मेरेपन के भाव का वैराग्य ही बेहद का वैराग्य है**

➳ _ ➳ समय की समीपता का फाउण्डेशन क्या है ??

→ बेहद की वैराग्यवृति

➳ _ ➳ बेहद की वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल बनाओ

→ जैसे सेवा का वायुमण्डल बनाते हो, प्रोग्राम बनाते हो

→ सिर्फ दिमाग तक ये वृत्ति नहीं, दिल तक पहुँचे

- **सबको information नही vibrations देनी है**
- तभी दिल तक पहुंचेगे